चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	2.5.26	3	2-3

खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भर बनाने में डा. रामधन का अहम योगदान

कार्यक्रम को संबोधित करते कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज • पीआरओ

जागरण संवाददाता • हिसार :खाद्यान्न उत्पादन में अभूतपूर्व योगदान देने वाले महान कृषि वैज्ञानिक स्वर्गीय राव बहादुर डा. रामधन सिंह की 135 वीं जयंती के अवसर पर चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय स्थित कमेटी कक्ष में एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। आनुवंशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित रहे।

कुलपति प्रो काम्बोज ने बताया कि उन्होंने गेहूं, चावल, जौ एवं दलहनों की उन्नत किस्में विकसित करके भारतीय कृषि को नई दिशा दी। हरित क्रांति के दौरान उनके योगदान से हरियाणा एवं पंजाब में उत्पादन और उत्पादकता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। उन्होंने बताया कि डा. रामधन सिंह ने 1933-34 में गेहूं की प्रसिद्ध किस्में सी-518 एवं सी-591 विकसित की, जो अपनी उच्च उत्पादन क्षमता और रोग प्रतिरोधकता के लिए जानी जाती हैं। उनके द्वारा विकसित बासमती चावल की अनेक किस्में तथा गेहूं की सी-306 आज भी लोकप्रिय हैं। अपने जीवनकाल में उन्होंने विभिन्न फसलों की 25 से अधिक उन्नत किस्में विकसित कीं। उन्होंने बताया कि डा. रामधन ने पारंपरिक खेती की बजाय वैज्ञानिक पद्धतियों से खेती करने के लिए किसानों को प्रेरित किया। वे कृषि शिक्षा के क्षेत्र में भी सक्रिय रहे और उन्होंने किसानों तथा छात्रों को आधुनिक तकनीकों की जानकारी दी, जिससे उत्पादन क्षमता में बढ़ोतरी हुई। उनके प्रयासों से खाद्यान्न उत्पादन में वृद्धि होने के साथ-साथ किसानों की आर्थिक स्थिति में भी सुधार हुआ।

कुलपति बलदेव राज काम्बोज ने कहा कि वैज्ञानिकों एवं विद्यार्थियों को उनके जीवन से प्रेरणा लेकर कृषि क्षेत्र की चुनौतियों का समाधान खोजने के लिए निरंतर अनुसंधान करना चाहिए। भारत में खाद्यान्न सुरक्षा एक बड़ी चुनौती है, जिसे वैज्ञानिक प्रयासों से ही पूरा किया जा सकता है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	2-5-26	2	1-2

स्व. राव बहादुर डॉ. रामधन सिंह की 135वीं जयंती पर एचएयू में कार्यक्रम आयोजित

हिसार | एचएयू में कृषि वैज्ञानिक स्व. राव बहादुर डॉ. रामधन सिंह की 135वीं जयंती पर कृषि कॉलेज के कमेटी कक्ष में कार्यक्रम किया गया। कार्यक्रम का आयोजन डिपार्टमेंट ऑफ जेनेटिक्स एंड प्लांट ब्रीडिंग की ओर से आयोजित किए इस कार्यक्रम में किया गया, इसमें कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज मुख्य अतिथि रहे। प्रो. बलदेव राज काम्बोज ने डॉ. रामधन सिंह के जीवन पर प्रकाश डालते हुए बताया कि उन्होंने गेहूं, चावल, जौ और दलहनों की 25 से अधिक उन्नत किस्में विकसित कर भारतीय कृषि को नई दिशा दी। उन्होंने बताया कि 1933-34 में विकसित गेहूं की किस्में सी-518 और सी-591 अपनी उच्च उत्पादन क्षमता और रोग प्रतिरोधकता के लिए प्रसिद्ध रहीं। बासमती चावल की कई किस्में और गेहूं की सी-306 आज भी लोकप्रिय हैं। उन्होंने कहा कि हरित क्रांति के दौरान उनके योगदान से हरियाणा और पंजाब में उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। उन्होंने किसानों को पारंपरिक खेती छोड़ वैज्ञानिक पद्धतियों को अपनाने के लिए प्रेरित किया, जिससे उत्पादन और आय दोनों में बढ़ोतरी हुई। अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने डॉ. रामधन सिंह की ओर से विकसित किस्मों और विश्वविद्यालय की उपलब्धियों की जानकारी दी। कृषि कॉलेज के अधिष्ठाता डॉ. रमेश कुमार गोयल ने अतिथियों का स्वागत किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि भूमि	2-5-26	12	3-4

खाद्यान्न उत्पादन में देश को आत्मनिर्भर बनाने में डॉ. रामधन का अहम योगदान

■ हकृवि में स्वर्गीय राव बहादुर डॉ. रामधन सिंह की जयंती पर कार्यक्रम

हिसार। खाद्यान्न उत्पादन में अभूतपूर्व योगदान देने वाले महान कृषि वैज्ञानिक स्व. राव बहादुर डॉ. रामधन सिंह की 135वीं जयंती पर एचएयू के कृषि महाविद्यालय के कमेटी कक्ष में एक कार्यक्रम हुआ। आनुवंशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग की ओर से हुए कार्यक्रम में कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज मुख्य अतिथि रहे। कुलपति प्रो. काम्बोज ने डॉ. रामधन सिंह के जीवन एवं कार्यों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि उन्होंने गेहूं, चावल, जौ एवं दलहनों की उन्नत किस्में विकसित करके भारतीय कृषि को नई दिशा दी। हरित क्रांति के दौरान उनके योगदान से हरियाणा एवं पंजाब में उत्पादन और उत्पादकता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। उन्होंने बताया कि डॉ. रामधन सिंह ने 1933-34 में गेहूं की प्रसिद्ध किस्में सी-518 एवं सी-591 विकसित की, जो अपनी उच्च उत्पादन क्षमता और रोग प्रतिरोधकता के लिए जानी जाती हैं। उनके द्वारा विकसित बासमती चावल की अनेक किस्में तथा गेहूं की सी-306 आज भी लोकप्रिय हैं। अपने जीवनकाल में उन्होंने विभिन्न फसलों की 25 से अधिक उन्नत किस्में विकसित कीं। डॉ. रामधन ने पारंपरिक खेती की बजाय वैज्ञानिक पद्धतियों से खेती करने के लिए किसानों को प्रेरित किया। वे कृषि शिक्षा के क्षेत्र में भी सक्रिय रहे और उन्होंने किसानों तथा छात्रों को आधुनिक तकनीकों की जानकारी दी, जिससे उत्पादन क्षमता में बढ़ोतरी हुई। उनके प्रयासों से खाद्यान्न उत्पादन में वृद्धि होने के साथ-साथ किसानों की आर्थिक स्थिति में भी सुधार हुआ।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	2.5.26	3	4-6

देश को खाद्यान्न उत्पादन के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने में डा. रामधन सिंह का अभूतपूर्व योगदान : प्रो. काम्बोज

हकृवि में स्वर्गीय राव बहादुर डॉ. रामधन सिंह की जयंती पर कार्यक्रम आयोजित

कार्यक्रम को संबोधित करते कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज।

हिसार, 1 मई (ब्यूरो): खाद्यान्न उत्पादन में अभूतपूर्व योगदान देने वाले महान कृषि वैज्ञानिक स्वर्गीय राव बहादुर डॉ. रामधन सिंह की 135 वीं जयंती के अवसर पर चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय स्थित कमेटी कक्ष में एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। आनुवंशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित रहे।

कुलपति प्रो काम्बोज ने डॉ. रामधन सिंह के जीवन एवं कार्यों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि उन्होंने गेहूं, चावल, जौ एवं दलहनों की उन्नत किस्में विकसित करके भारतीय कृषि को नई दिशा दी। हरित क्रांति के दौरान उनके योगदान से हरियाणा एवं पंजाब में उत्पादन और उत्पादकता में उगेखनीय वृद्धि हुई। उन्होंने बताया कि डॉ. रामधन सिंह ने 1933-34 में गेहूं की प्रसिद्ध किस्में सी-518 एवं सी-591 विकसित की, जो अपनी उच्च उत्पादन क्षमता और रोग प्रतिरोधकता के लिए जानी जाती हैं। उनके द्वारा विकसित बासमती चावल की अनेक किस्में तथा गेहूं की सी-306 आज भी लोकप्रिय हैं। अपने जीवनकाल में उन्होंने विभिन्न फसलों की 25 से अधिक उन्नत किस्में विकसित कीं। कुलपति ने कहा कि वैज्ञानिकों एवं विद्यार्थियों को उनके जीवन से प्रेरणा लेकर कृषि क्षेत्र की चुनौतियों का समाधान खोजने के लिए निरंतर अनुसंधान करना चाहिए। भारत में खाद्यान्न सुरक्षा एक बड़ी चुनौती है, जिसे वैज्ञानिक प्रयासों से ही पूरा किया जा सकता है।

कार्यक्रम के दौरान डॉ. रामधन सिंह को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने डॉ रामधन सिंह के द्वारा विकसित की गई विभिन्न उन्नत किस्मों पर विस्तार से प्रकाश डाला।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	2.5.16	4	4-5

कृषि क्षेत्र की चुनौतियों के समाधान के लिए अनुसंधान पर दिया जोर

माई सिटी रिपोर्टर

राव बहादुर डॉ. रामधन सिंह की जयंती के उपलक्ष्य में कार्यक्रम

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) के कुलपति प्रो. बलदेव राज कम्बोज ने कहा कि कृषि वैज्ञानिक राव बहादुर डॉ. रामधन सिंह ने फसलों की 25 से अधिक उन्नत किस्में विकसित कीं। किसानों को पारंपरिक ढर्रे के बजाय वैज्ञानिक पद्धतियों को अपनाने के लिए प्रेरित किया। वैज्ञानिकों एवं विद्यार्थियों को उनके जीवन से प्रेरणा लेकर कृषि क्षेत्र की चुनौतियों के समाधान खोजने के लिए निरंतर अनुसंधान करना चाहिए।

काम्बोज कृषि महाविद्यालय स्थित कमेटी कक्ष में आनुवंशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग की ओर से कृषि वैज्ञानिक स्वर्गीय राव बहादुर डॉ. रामधन सिंह की 135 वीं जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में बतौर मुख्यअतिथि बोल रहे थे।। कुलपति ने कहा कि डॉ. रामधन ने गेहूं, चावल, जौ और दलहनों की उन्नत किस्में विकसित कर भारतीय कृषि को नई दिशा दी। हरित क्रांति के दौरान उनके प्रयासों से हरियाणा और पंजाब में उत्पादन और उत्पादकता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।

उन्होंने 1933-34 में गेहूं की प्रसिद्ध किस्में सी-518 और सी-591 विकसित की जो अपनी उच्च उत्पादन क्षमता और रोग प्रतिरोधकता के लिए जानी जाती हैं।। उनकी ओर से विकसित बासमती चावल और गेहूं की सी-306 आज भी लोकप्रिय हैं। कृषि शिक्षा और आधुनिक तकनीकों के प्रचार में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जिससे किसानों की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठकपक्ष	02.05.2026	--	--

देश को खाद्यान्न उत्पादन के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने में डॉ रामधन सिंह का अभूतपूर्व योगदानः प्रो. बलदेव राज काम्बोज

हकृवि में स्वर्गीय राव बहादुर डॉ. रामधन सिंह की जयंती पर कार्यक्रम आयोजित

-पाठकपक्ष न्यूज-

हिसार, 2 मई : खाद्यान्न उत्पादन में अभूतपूर्व योगदान देने वाले महान कृषि वैज्ञानिक स्वर्गीय राव बहादुर डॉ. रामधन सिंह की 135 वीं जयंती के अवसर पर चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय स्थित कमेटी कक्ष में एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। आनुवंशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित रहे।

कुलपति प्रो काम्बोज ने डॉ. रामधन सिंह के जीवन एवं कार्यों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि उन्होंने गेहूं, चावल, जौ एवं दलहनों की उन्नत किस्में विकसित करके भारतीय कृषि को नई दिशा दी। हरित क्रांति के दौरान उनके योगदान से हरियाणा एवं पंजाब में उत्पादन और उत्पादकता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। उन्होंने बताया कि डॉ. रामधन सिंह ने 1933-34 में गेहूं की प्रसिद्ध किस्में सी-518 एवं सी-591 विकसित की, जो अपनी उच्च उत्पादन क्षमता और रोग प्रतिरोधकता के लिए जानी जाती हैं। उनके द्वारा विकसित बासमती चावल की अनेक किस्में तथा गेहूं की सी-306 आज भी लोकप्रिय हैं। अपने जीवनकाल में उन्होंने विभिन्न फसलों की 25 से अधिक उन्नत किस्में विकसित कीं। उन्होंने बताया कि डॉ. रामधन ने पारंपरिक खेती की बजाय वैज्ञानिक पद्धतियों से खेती करने के लिए किसानों को प्रेरित किया। वे कृषि शिक्षा के क्षेत्र में भी सक्रिय रहे और उन्होंने किसानों तथा छात्रों को आधुनिक तकनीकों की जानकारी दी, जिससे उत्पादन क्षमता में बढ़ोतरी हुई। उनके प्रयासों से खाद्यान्न उत्पादन में वृद्धि होने के साथ-साथ किसानों की आर्थिक स्थिति में भी सुधार हुआ। कुलपति ने कहा कि वैज्ञानिकों एवं विद्यार्थियों को उनके जीवन से प्रेरणा लेकर कृषि क्षेत्र की चुनौतियों का समाधान खोजने के लिए निरंतर अनुसंधान करना चाहिए। भारत में खाद्यान्न सुरक्षा एक बड़ी चुनौती है, जिसे वैज्ञानिक प्रयासों से ही पूरा किया जा सकता है। कार्यक्रम के दौरान डॉ. रामधन सिंह को श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने डॉ रामधन सिंह के द्वारा विकसित की गई विभिन्न उन्नत किस्मों पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा गत वर्षों विकसित की गई किस्मों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. रमेश कुमार गोयल ने सभी का स्वागत किया। मंच संचालन एवं धन्यवाद प्रस्ताव गेहूं अनुभाग के अध्यक्ष डॉ विक्रम सिंह ने प्रस्तुत किया। इस अवसर पर कुलसचिव सहित विभिन्न महाविद्यालयों के अधिष्ठाता, निदेशक, अधिकारी, विभागाध्यक्ष, वैज्ञानिक व कर्मचारी भी उपस्थित रहे।